चहल-पहल

फरवरी 2025

वर्ष 5 अंक 6

अनुक्रमणिका

संपादकीय	3

कहानियां

खीमा दोस्त	डॉ. कुसुम रानी	4
झड़ गई दादागिरी	गोविन्द भारद्वाज	7
मुसीबत में मत....	पूर्ति खरे	12
कुणाल के चूजे	टीकेश्वर सिन्हा	22
रात का समय	अर्पित पुष्करणा	25

कविताएं

करती घड़ी	दिनेश विजयवर्गीय	09
लालटेन	नरेश उनियाल	09
नहीं पेड़ पर...	डॉ. गोपाल	10
हे ईश्वर	डॉ. नंदन पंडित	10
टमाटर	गौरीशंकर वैश्य	11
रंग–बिरंगी प्यारी...	डॉ. सत्यवान	11
चंदा माता	डॉ. अरविन्द दुबे	24
डर ही डर	डॉ. प्रदीप मुखर्जी	24

विविध

बच्चों का कोना		15 से 17
बाल पहेलियां	डॉ. कमलेन्द्र	14
भूल–भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	18
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	19
एस्ट्रोनॉमी क्लब	संजय श्रीमाली	26

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित

संपादक - संजय श्रीमाली

फरवरी 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण पर अंकित चित्र राम भादाणी द्वारा बनायें गए है।

संपादकीय

बंसत ऋतु प्रकृति का श्रृंगार करती है

प्यारे बच्चों

सर्दी धीरे–धीरे समाप्त हो रही है और बंसत ऋतु का आगमन होने जा रहा है। आपको पता होगा कि बंसत को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। क्योंकि बंसत में ही प्रकृति अपना श्रृंगार करती है। पेड़ों से पुराने पत्ते झड़ना आरम्भ हो जाते है तथा नये पत्तों हेतु अंकुर लगने लगत हैं। हवा की बयार का प्राकृतिक संगीत चारो ओर सुनाई देने लग जाता है। खुशनुमा और ताजगी भरा मौसम हमें देखने को मिलता है।

वहीं फरवरी माह वर्ष का सबसे छोटा महीना होता है। यह महीना छोटा क्यों होता है, इसके पीछे खगोल विज्ञान है। जिसके बारे में आप सभी जानते होगें। मैं आपको बताना चाह रहा हूं कि विज्ञान का कोई भी आयाम हो चाहे वह रसायन, भौतिक, जीव एवं खगोल सभी अपनी तर्कशक्ति पर खरे उतर कर ही हमें मार्गदर्शन देते है।

हम कई प्रकार के जादूई खेल या इसी प्रकार की घटनाओं को देखते है तो उसमें विज्ञान एवं तकनीकी का मिश्रण होता है। जिसको व्यक्ति विशेष बहुत ही सटिकता एवं अभ्यास के द्वारा हमारे सामने करतब के रूप में प्रदर्षित करते है, और हम उसको जादू या दैवियशक्ति मान बैठते है।

हमें विज्ञान की पुस्तकें पढ़नी चाहिए। उसमें दी गई जानकारी को सावध ाानी समझना चाहिए तथा अपने अध्यापकों के साथ उस पर विचार–विमर्श करना चाहिए जिससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी तथा आप कई अंधविश्वासों से बच सकेगें।

संजय श्रीमाली

खीमा दोस्त

डॉ. कुसुम रानी नैथानी

राजुल का सबसे अच्छा दोस्त खीमा था। वे दोनों बचपन से एक ही स्कूल में पढ़ते थे। गर्मियों की छुट्टी थी और खीमा अपने मम्मी पापा के साथ गांव गया हुआ था। राजुल को उसके बगैर अच्छा नहीं लग रहा था। वह उसकी लौटने का इंतजार कर रहा था। स्कूल खुलने वाले थे। जब खीमा ने अपने आने की खबर सुनाई तो राजुल खुश हो गया।

रास्ते में आते हुए अनहोनी घट गई। उनकी कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई और उसमें उसके मम्मी पापा और वह बहुत बुरी तरह जख्मी हो गयें। उन्हें अस्पताल लाया गया लेकिन खीमा की हालत बहुत नाजुक थी। बहुत कोशिश के बाद भी खीमा को नहीं बचाया जा सका और उसकी जान चली गई।

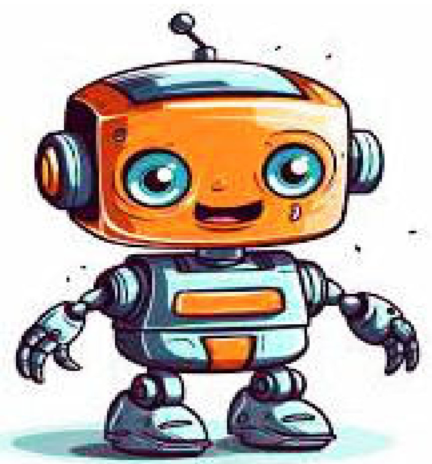
चित्र साभार - www.freepik.com

यह सुनकर राजुल को बहुत धक्का लगा। खीमा के इस तरह अचानक चले जाने से राजुल अपने को संभाल नहीं पाया और वह डिप्रेशन में चला गया। यह देखकर पावस और शीला बहुत परेशान थे। उन्होंने अपनी ओर से उसे इस सदमे से बाहर निकालने की बहुत कोशिश की। कई डॉक्टर के पास भी गए लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। वह उससे उबर नहीं पा रहा था। खीमा के जाने पर राजुल के जीवन में कोई रोशनी नहीं रह गई थी। खीमा की मौत की खबर ने उसे अंदर तक तोड़ दिया था। अब न वह खेलता था और न दोस्तों से मिलता था।

पावस और शीला उसकी हालत देखकर बहुत परेशान थे। एक दिन पावस अपने अंकल से मिलने उनके घर गए थे। वह काफी बुजुर्ग हो गए थे और इन दिनों उनकी देखभाल करने वाला भी कोई घर पर नहीं था। उन्होंने घंटी बजाई। जरा देर में दरवाजा खुल गया। उन्होंने देखा सामने एक

रोबोट खड़ा था जो अंकल के सारे काम कर रहा था। अंकल भी उससे वैसे ही बात कर रहे थे जैसे कोई घर का सदस्य हो। अंकल बोले – रोबी के होते हुए मुझे कोई परेशानी नहीं है। यह मेरा बहुत ख्याल रखता है और मुझे किसी बात की कमी महसूस नहीं होने देता।

पावस को भी रोबी को देखकर आश्चर्य हो रहा था। यह देखकर उनके दिमाग में भी एक आइडिया आया। वे तुरंत बाजार गए। उन्होंने भी एक रोबोट आर्डर किया और कुछ खास फीचर्स उसमें डालने के लिए कह दिया। एक हफ्ते बाद रोबोट उनके घर पहुंच गया। वह बिल्कुल इंसान जैसा दिखता था। पावस ने उसे राजुल के कमरे में रख दिया। इस पर भी उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। कमरे में घुसते ही रोबोट बोला– हेलो राजुल कैसे हो ? मैं खीमा हूं तुम्हारा दोस्त।

खीमा का नाम सुनकर राजुल का दिल धक् से रह गया। उसने रोबोट की ओर ध्यान से देखा और फिर झुंझलाकर बोला– "यह क्या मजाक है ? तुम खीमा कैसे हो सकते हो। तुम्हें पता भी है वह कौन था ? मुझे सब पता है चाहे तो कुछ भी पूछ लो। इतना कहकर उसने उसके मम्मी–पापा का नाम, परिवार का विवरण और पता सब राजुल को सुना दिया।

चित्र साभार - www.freepik.com

राजुल को उससे यह सब उम्मीद नहीं थी। वह चौंक कर बोला– यह कैसे हो सकता है ? रोबोट ने कहा– "मुझे मालूम है कि मैं वैसा नहीं हूं जैसा तुम्हारा खीमा था लेकिन मैं तुम्हारे साथ वह सारी बातें फिर से दोहराना चाहता हूं जो हमने साथ की थीं। याद है वह दिन जब हम स्कूल के प्रोजेक्ट में झूले का मॉडल बना रहे थे और तुमने गोंद अपनी शर्ट पर गिरा लिया था ?" राजुल का चेहरा थोड़ा बदला। वह बोला – "तुम्हें यह कैसे पता?" "तुम्हारा खीमा हूं ना। तुम्हें वह क्रिकेट मैच याद होगा जब

हमने बैट छुपा दिया था ताकि खेल में तुम्हें बैटिंग पहले मिले।"

राजुल की आंखों में हल्की चमक आई। वह धीरे–धीरे पास आया और रोबोट के बगल में बैठ गया। वह बोला– "तुम सच में खीमा जैसे हो।" अगले कुछ दिनों में रोबोट ने राजुल के साथ कई मजेदार बातें और खेल शुरू किए। वह राजुल के पुराने पसंदीदा खेलों की बातें करता, उसे उनके अधूरे प्रोजेक्ट पूरे करने में मदद करता और यहां तक कि राजुल को खीमा की पुरानी मजेदार कहानियां सुनाता। राजुल को रोबोट का साथ अच्छे लगने लगा था। वह हर समय उसे खुश रखने की कोशिश करता और खीमा से जुड़ी हुई ढ़ेर सारी बातें सुनाता।

धीरे–धीरे वह अपने दुख से उबरने लगा और अपने दिल में छुपे हुए दुख को रोबोट के साथ बांटने लगा। रोबोट अपनी ओर से उसे खुश रखने का पूरा प्रयास कर रहा था और वह इसमें सफल भी हो गया। एक दिन रोबोट बोला – खीमा हमेशा कहता था, तुम सबसे मजबूत हो। वह नहीं चाहता कि तुम इस तरह दुखी रहो।"

यह सुनकर राजुल का दिल भर आया। "मैं उसे कैसे भूल जाऊं ?'' वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त था।" राजुल ने कहा। "खीमा को भूलने की बात नहीं है राजुल उसकी यादों को खुशी के साथ जीने की बात है। उसने तुम्हें जो सिखाया वही तुम्हारी पूंजी है। अगर तुम खुश रहोगे तो खीमा भी खुश होगा।" रोबोट से बातें करके राजुल का मन धीरे–धीरे हल्का होने लगा। उसने अपने जीवन को नए सिरे से देखना शुरू किया। वह खेलने लगा, दोस्तों से मिलने लगा और सबसे बड़ी बात उसने खीमा की यादों को गम के बजाय प्रेरणा में बदल दिया। एक दिन वह रोबोट से बोला – "तुम सच में मेरे सबसे अच्छे दोस्त हो खीमा।"

रोबोट ने मुस्कुराकर कहा– "और तुम हमेशा मेरे दोस्त रहोगे।" यह देखकर पावस और शीला भी खुश हो गए। रोबोट की मदद से उन्होंने राजुल को अवसाद से उबार लिया था। पावस सोच रहे थे कि तकनीकी का यदि सही तरीके से प्रयोग किया जाए तो वह ज्ञान देने के अलावा इंसानों के दुख दर्द को दूर करने में भी काफी हद तक मददगार हो सकते हैं।

पता – ओंकार रोड, यू.के.

झड़ गयी दादागिरी

गोविन्द भारद्वाज

बसंत ऋतु में वन–उपवन में बहार छाई हुई थी। सभी प्रकार के पेड़ पौधों पर रंग–बिरंगे फूल खिलखिला रहे थे। बसंत ऋतुराज का आनंद लेने के लिए कुछ पंछियों ने मिलकर झूला डाल लिया। उस झूले पर सभी पंछी समय निकालकर झूला झूलते।

एक बार रैटू चूहे ने हरियल तोते को झूलता हुआ देख लिया। उसने मन ही मन खुद झूलने की ठान ली। एक बार नन्नू चिड़िया की बेटी चुन्नू झूल रही थी। रैटू ने मौके का फायदा उठाकर ऊपर चढ़ गया। चुन्नू रैटू की बड़ी–बड़ी मूंछें देखकर उड़ गयी। रैटू फुर्ती से झूले में बैठ गया। उसे बड़ा आनंद आया। उसका मन अब रोज झूलने को करता। हरियल तोता, नन्नू चिड़िया कालू तीतर, और पीलू कबूतर रैटू की हरकत से परेशान रहने लगे। जब देखो वही झूले में झूलता हुआ मिलता। एक बार चुन्नू ने अपनी मां से झूलने के लिए ज़िद की। नन्नू चिड़िया ने उसे बहुत समझाया। वह नहीं समझी तो नन्नू ने गुस्से में आकर उसे दो–चार थप्पड़ लगा दिए।

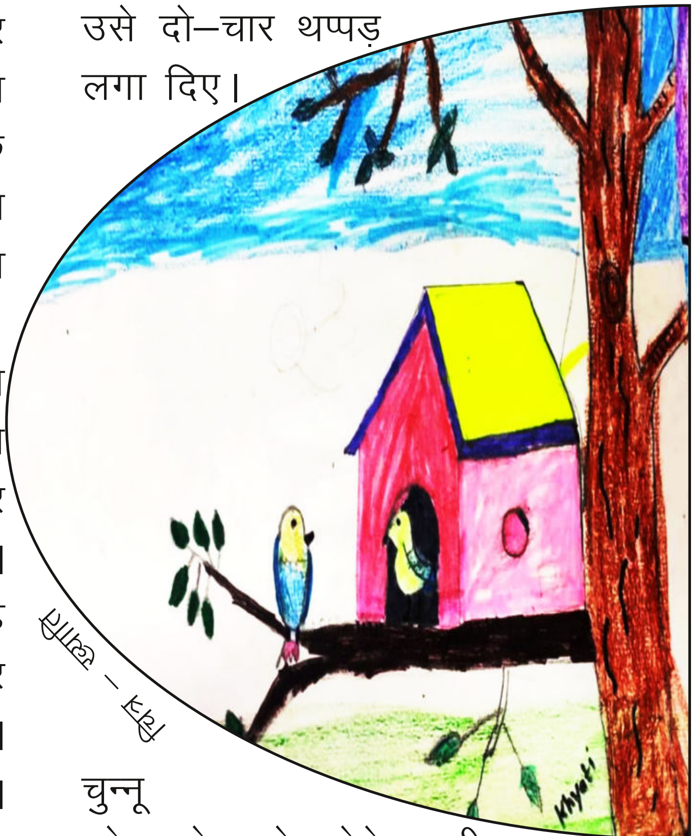

चित्र – ख्याति

चुन्नू जोर–जोर से रोने लगी। उसकी आवाज सुनकर कागू कौआ ने नन्नू से पूछा, ''चुन्नू क्यों रो रही है...?'' 'क्या बताऊँ काका ये जिद्दी हो गयी है आजकल।' नन्नू ने कहा। कागू बोला, 'बच्चे तो जिद्दी होते ही हैं आजकल के.... .क्या मांग रही है ये?' मांग तो कुछ नहीं

रही बस झूला झूलने की जिद्द कर रही है। उसने जवाब दिया। झूला दो उसे... बच्चों को झूलना अच्छा लगता है। कागू ने कहा।

नन्नू कुछ उदास हो गयी। उसने कोई जवाब नहीं दिया तो उसने फिर पूछा, नन्नू बेटा...क्या बात है, जवाब नहीं दिया मेरी बात का...? वह बोली, हरियल तोते के साथ मिलकर हम सब पंछियों ने जो झूला डाला था, उस पर रैटू चूहे ने अधिकार जमा लिया है। जब देखो वही उस पर बैठा रहता है। कुछ कहे तो काटने को दौड़ता है या भला—बुरा कहता है।

अच्छा यह बात है...अभी करता हूं उस रैटू के बच्चे का इलाज...। कागू ने कहा। वह तुरंत उड़ कर झूले के पास गया। वहां सचमुच रैटू मस्ती से झूले में लेटा हुआ था। रैटू भाई खूब झूल लिया... अब इस चुन्नू को झूलने दे। कागू कौए ने उसे समझाते हुए कहा। रैटू अपनी मूंछें हिलाते हुए बोला, कौन है बे तू.... और मुझे झूले से उतारने की तेरी हिम्मत कैसे हुई ? अबे बोलने की तमीज भी नहीं है तुझ को... मैं कौन हूं, अभी तुझे बताता हूं। कागू ने तुरंत रैटू को चोंच में दबाया और बिल्लू बिल्ले के पास पहुंच गया। उधर चुन्नू फटाफट झूले में बैठ गयी। क्या हुआ कागू आज इसे कहाँ घूमा रहे हो ? बिल्लू ने पूछा।

बस तुम्हारी सेवा में लाया हूं...इस नालायक को...। कागू बोला। कागू कौए ने जैसे ही रैटू चूहे को बिल्लू के सामने रखा। रैटू डर गया। वह गिड़गिड़ाते हुए बोला, काका..मुझे माफ़ कर दो...मैंने आपको पहचाना नहीं था।

अब तो पहचान गया ना.... बिल्लू दादा ही करेगा तेरा इलाज..... बेचारे पंछियों के सामने दादागिरी झाड़ता है। कागू ने उसे डराते हुए कहा। बोल क्या करूँ तेरा... चबा जाऊँ पान की तरह..। बिल्लू ने घूरते हुए कहा। उसी समय नन्नू, हरियल, पीलू और कालू सब मिलकर आ गये। उन्हें देखकर रैटू चूहे ने क्षमा मांगते हुए कहा, मुझे माफ़ कर दो नन्नू बहन.... अब कभी ऐसी शरारत नहीं करूँगा।

छोड़ दो... काका इसे... माफी माँग रहा है। बस गलती करके सुधर जाए उसे माफ कर देना चाहिए। नन्नू ठीक कह रही है काका..। हरियल तोते ने भी कहा। बिल्लू बोला, चलो छोड़ देते हैं...पर ध्यान रखना फिर से कोई शिकायत आई तो...। नहीं दादा.... अब कभी गलती नहीं करूंगा। रैटू ने मूंछों को झुकाते हुए कहा।

सभी से माफी मांग कर रैटू वहां से नौ दो ग्यारह हो गया। उसके दौड़ते ही सब जोर—जोर से हंसने लगे।

पता –हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, अजमेर

करती घड़ी

दिनेश विजयवर्गीय

चित्र – राधा शर्मा

टिक टिक टिक टिक
समय का मूल्य बताती
रूप रूपाली और मनभावन
प्रिय यह सबको यह लगती ।
बच्चों को यह जल्द उठाकर
पढ़ने तुरंत बिठाती
पल–पल का यह समय बता कर
चौकस सबको करती।
जीवन में तुम बढ़ते रहना
शिक्षा ऐसी देती
जन जन की यह सेवा करती है
आलस सबका हरती।

पता – 215 मार्ग, 4 रजत कॉलोनी, बूंदी, राजस्थान

लालटेन

नरेश चन्द्र उनियाल

चित्र साभार - www.Memories-Lantern

लालटेन मुझको सब कहते,
जल कर राह दिखाती सबको।
मैं बिखेरकर निज विज्योति को,
सुन्दर सीख सिखाती सबको।

गाँवों में जब न थी रोशनी
सारा तम मैं ही हरती थी।
नहीं किसी से भेदभाव था,
सब घर को रोशन करती थी।

लालटेन के जैसा गुण यदि,
इंसानों में भी आ जाये।
अन्धकार हो दूर सभी का,
दिन सबके सुखमय हो जायें।

पता – पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

नहीं पेड़ पर मारो पत्थर

डॉ. गोपाल राजगोपाल

चित्र – नीरज चौहान

नहीं पेड़ पर मारो पत्थर
इस पर पंख–पखेरू का घर

ये मेघों को पास बुलाते
उमड़–गुमड़ कर जो छा जाते
फिर करते बरसातें झिर–मिर
नहीं पेड़ पर मारो पत्थर

इस पर पक्षी नीड़ बनाते
मीठे–मीठे गीत सुनाते
खूब मिलाते हैं सुर में सुर
नहीं पेड़ पर मारो पत्थर

इनकी छाया निर्मल–निर्मल
ये देते हमको मीठे फल
शीतल पवन बहाते सर–सर
नहीं पेड़ पर मारो पत्थर

हमें वेदना होती जितनी
इनको भी होती है उतनी
चोटों से इनको लगता डर
नहीं पेड़ पर मारो पत्थर

पता – 225–सरदारपुरा, उदयपुर

हे! ईश्वर

नंदन पंडित

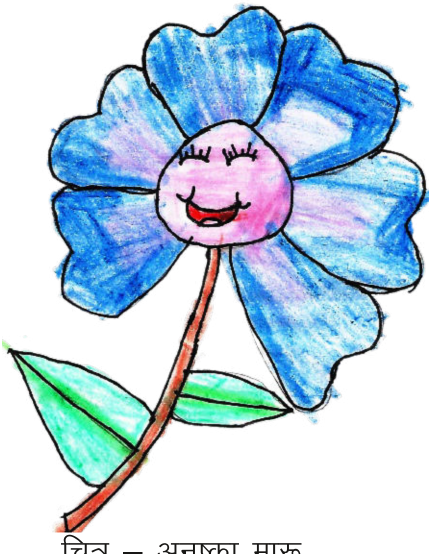
चित्र – अनुष्का मारू

हे! ईश्वर, ऐसा वर पाऊँ
फूलों सा खुशबू फैलाऊँ

दीन–दुःखी यदि कोई रोए
अम्बर नीचे भूखा सोए
सबको दवा, अन्न बन जाऊँ

छिड़े कहीं जब झगड़ा–झंझट
मानवता पर आए संकट
दिल का टूटा तार मिलाऊँ

कहीं दिखे अनपढ़ अज्ञानी
अँधियारों में डूबा प्राणी
अक्षर–अक्षर दीप जलाऊँ

पता– इटियाथोक, उत्तर प्रदेश

टमाटर (पहेली कविता)

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

रस का मटका
डाल पर लटका।
खेत ने पटका
किचेन में अटका।

कच्चा हरा है
पका लाल है
गोल–गोल है
क्या कमाल है

हवा दे रही
जोर का झटका।

बनती चटनी
है सलाद भी
'सूप' पियो तो
मिले स्वाद भी

लो गिलास भर
गट–गट गटका।

रक्त सुवर्द्धक
जाना–माना
विटामिन– सी का
भरा खजाना

फल है पर
सब्जी में भटका।

अहा! टमाटर
जान गए क्या
ठीक–ठीक
पहचान गए क्या

अब तो शेष
न मन में खटका।

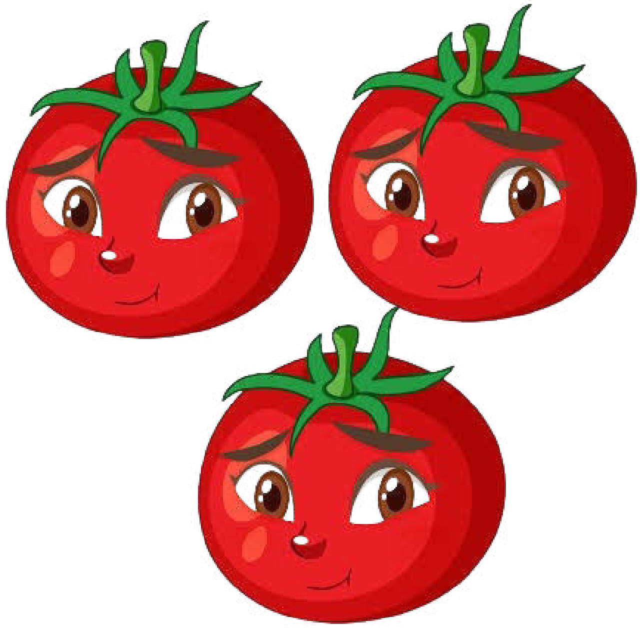

चित्र साभार - www.freepik.com

पता – 117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ

रंग–बिरंगी प्यारी तितली

डॉ. सत्यवान सौरभ

डाल–डाल पर आयी तितली,
सबके मन को भायी तितली।
सुन्दर–सुन्दर फूल खिले हों,
देगी वहीं दिखायी तितली।।
तितली रानी, रूप तुम्हारा,
लगता सबको प्यारा–प्यारा।
फूल–फूल पर मंडराती ऐसे,
भर जाता है उपवन सारा।।
कली–कली छिप जाती है,
दूर–दूर तक उड़ जाती है।
रंग–बिरंगी प्यारी तितली,
तू सबके मन को भाती है।।
लुका–छिपी का खेल खेलती,
करती रहती है मनमानी।
हाथ नहीं किसी के आती,
होती तितली बड़ी सयानी।।

चित्र – धनराज

पता –333, परी वाटिका,
कौशल्या भवन, भिवानी, हरियाणा

मुसीबत में मत घबराना

पूर्ति खरे

चारु का आज स्कूल में डांस प्रोग्राम था। पहले से ही वह अपने डांस परफॉरमेंस को लेकर घबराई हुई थी उस पर उसकी बस भी छूट गई। बस छूटते ही वह सड़क पर खड़ी फुबक–फुबक कर रोने लगी तो उसके साथ खड़ा उसका दोस्त ध्रूव बोला... अरे! रो क्यों रही हो ? स्कूल बस ही तो छूटी है कौन सा स्कूल छूट गया, घर चलो हम अपने पेरेंट्स के साथ स्कूल चलते हैं।

नहीं! ध्रूव अब तो देर हो जाएगी, मेरे डांस का क्या होगा ? घर वापस गए तो मम्मी और पापा भी डाँटेगें। यह कहती हुई वह बराबर रोये जा रही थी। तो फिर क्या करें, यहीं खड़े होकर रोते रहें क्या ? ध्रूव अबकी गुस्सा में बोला तो चारु बोली... क्यों न हम सड़क पर बस के पीछे तेज़ दौड़ लगाकर बस को पकड़ लें।

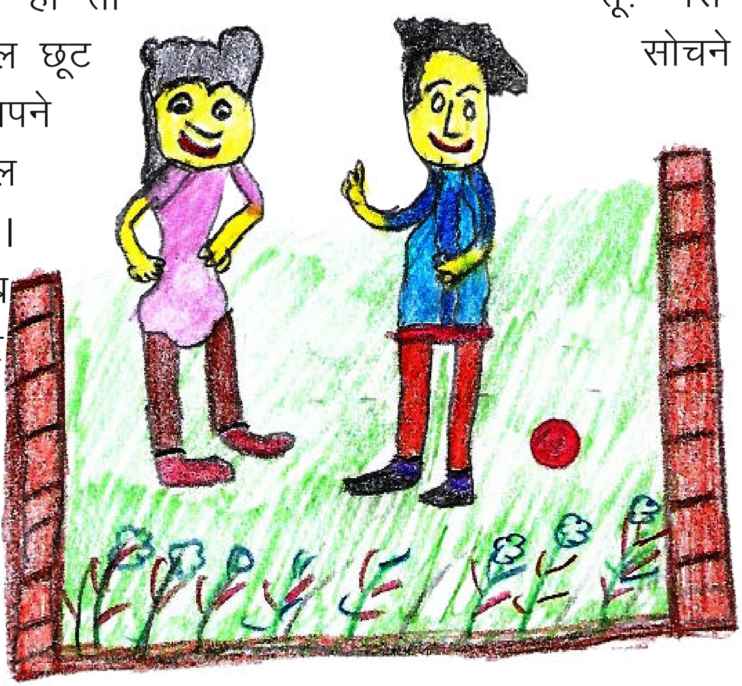

चित्र – राकेश जोशी

तेरा! दिमाग़ खराब है क्या! वह बस है हम दौड़कर भी उसे नहीं पकड़ सकते और सड़क पर इस तरह से दौड़ना जोखिम से भरा भी हो सकता है, तू! मेरी बात मान, अब सोचने में देर मत कर और घर चल। ध्रूव चारु को समझाकर घर ले आया तो चारु के पापा ने बस छूटने की बात सुनकर तुरन्त अपनी कार निकाली और दोनों बच्चो को कार में बैठाकर तुरन्त स्कूल के लिए रवाना हो गए।

यहाँ चारु अब भी रोये जा रही थी तभी चारु के पापा बोले, बेटा! हम आराम से टाइम पर स्कूल पहुँच जायेगें, तुम रोना बंद करो प्लीज़! तभी ध्रूव बोला, अंकल! यही बात तो मैं कब से इसे समझा रहा हूं, लेकिन इसकी तो छोटी–छोटी सी प्रॉब्लम में ऐसे ही रोने की आदत है, लाइफ में आगे भी न जाने कौन सी मुश्किलें आ सकती हैं, मेरे पापा कहते हैं कि मुश्किल समय में घबराकर नहीं बल्कि धैर्य से काम लेना चाहिए।

वाह! ध्रूव तुम्हारे पापा बिल्कुल सही कहते हैं, घबराहट में हम हमेशा ग़लत और उल्टे–पुल्टे फैसले ले लेते हैं। चारु के पापा ने ध्रूव की बात का समर्थन किया। तो ध्रूव सबको अपना एक मुश्किल समय वाला किस्सा सुनाने लगा–

पता है चारु! एक बार मैं अपने माँ–पापा के साथ खाटूश्याम दर्शन के लिए गया वहाँ पर काफी भीड़ थी, गलती से मेरा हाथ माँ के हाथों से छूट गया और मैं पीछे रह गया। चारु की धड़काने यह सुनकर बढ़ गईं तो वह बोली, फिर तुम खो गए वहॉं ? नहीं! चारु, खो जाता तो तुम्हारे साथ स्कूल कैसे जाता, मैं बिना घबराए एक पुलिस अंकल के पास गया उन्हें पापा का नम्बर बताया तो उन्होंने नम्बर डायल किया पर पापा का नम्बर नेटवर्क प्रॉब्लम के कारण नहीं मिला। फिर चारु ने आगे की बात जानने की जिज्ञासा से ध्रूव से पूछा तो, ध्रूव बोला, फिर क्या जहाँ अनाउंसमेंट हो रहा था मैं वहाँ गया और माइक पकड़ कर पापा को उसी जगह पर बोला लिया, बस!

अबकी चारु के पापा ध्रूव को शब्बासी देते हुए बोले, क्या बात है ध्रूव! ऐसे ही अगर मुसीबत में धैर्य और सूझ–बूझ से काम लिया जाए तो हम हर मुश्किल से बाहर निकाल आएं।श्श

चारु सोच रही थी कि स्कूल बस छूटना तो एक छोटी सी बात है, इतनी सी बात से वह क्यों घबरा गई जबकि ध्रूव बड़ी मुसीबत में भी नहीं डरा। यह सोचते हुए उसने फैसला लिया कि आगे से वह किसी भी स्थिति में घबरायेगी नहीं बल्कि आराम से स्थिति को समझकर उससे निकालने की कोशिश करेगी और हमेशा उचित फैसला लेगी। क्योंकि किसी भी स्थिति में घबराकर नहीं बल्कि हिम्मत देखाकर, सूझ–बूझ से, धैर्य से ही काम बनता है।

कुछ ही पल में स्कूल आ गया था और चारु के भीतर की घबराहट अब छू थी।

पता – जयपुर राजस्थान

बाल पहेलियां

डॉ. कमलेन्द्र कुमार

1

सर्दी में सब चाहें
मुझको,
भानु के संग आऊँ।
दो अक्षर का नाम हमारा,
बोलो क्या कहलाऊँ
?

2

है मेरे आँगन जीव
जंतु पंछी विचरण करते।
नदियां झरने कल—कल बहते,
सन्नाटे को हरते।।

उत्तर

1-धूप
2- जंगल
3-दुकान
4-पनीर

3

प्रथम वर्ण को अगर
हटा दो,
बन जाती मैं कान।
भिन्न—भिन्न की चीजें
रखती मैं ले लो
करके
ध्यान

4

प्रथम वर्ण को
अगर हटा दो,
बन जाता मैं नीर।
सदा दूध से बनता हूँ मैं,
कहते मुझे..... ।।

पता –कालपी जिला जालौन
उत्तर प्रदेश

बच्चों का कोना

सेजल सिंह, रायबरेली

स्तुति बिस्सा, बीकानेर

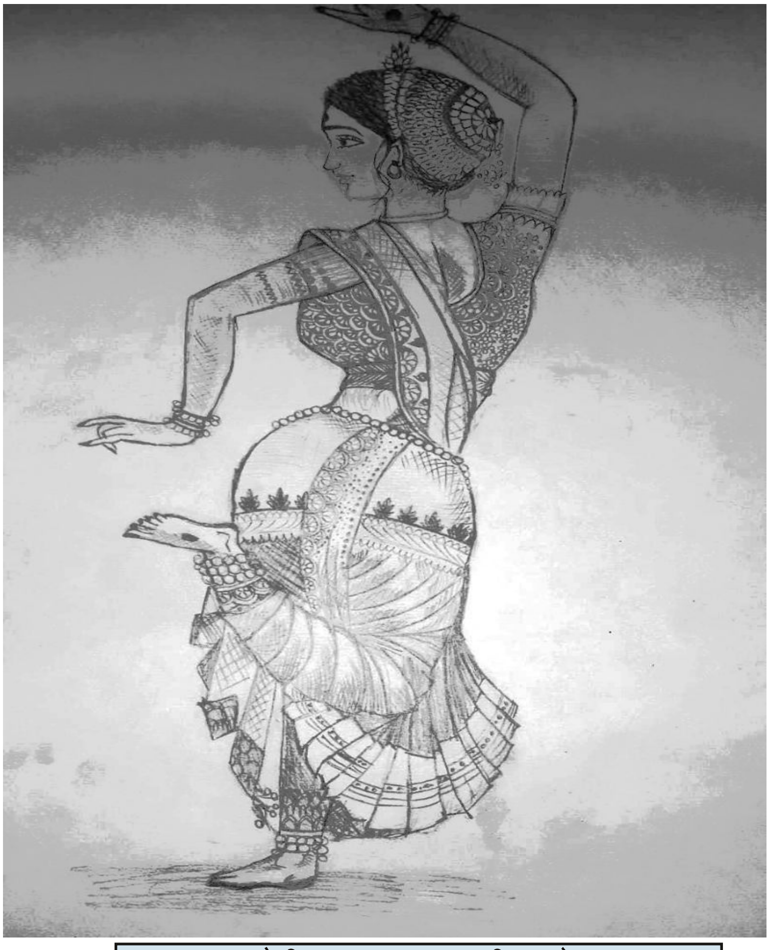

गौरी उपाध्याय, बीकानेर

आयुष्मान जोशी, बीकानेर

इति हर्ष, बीकानेर

नीतेश सिन्हा, छत्तीसगढ़

दिव्या, बीकानेर

भूल-भूलैया

चांद मोहम्मद घोसी

अजायबघर के इन चित्रों में क्या अजब-गजब है ? बताओ तो हम भी जानें।

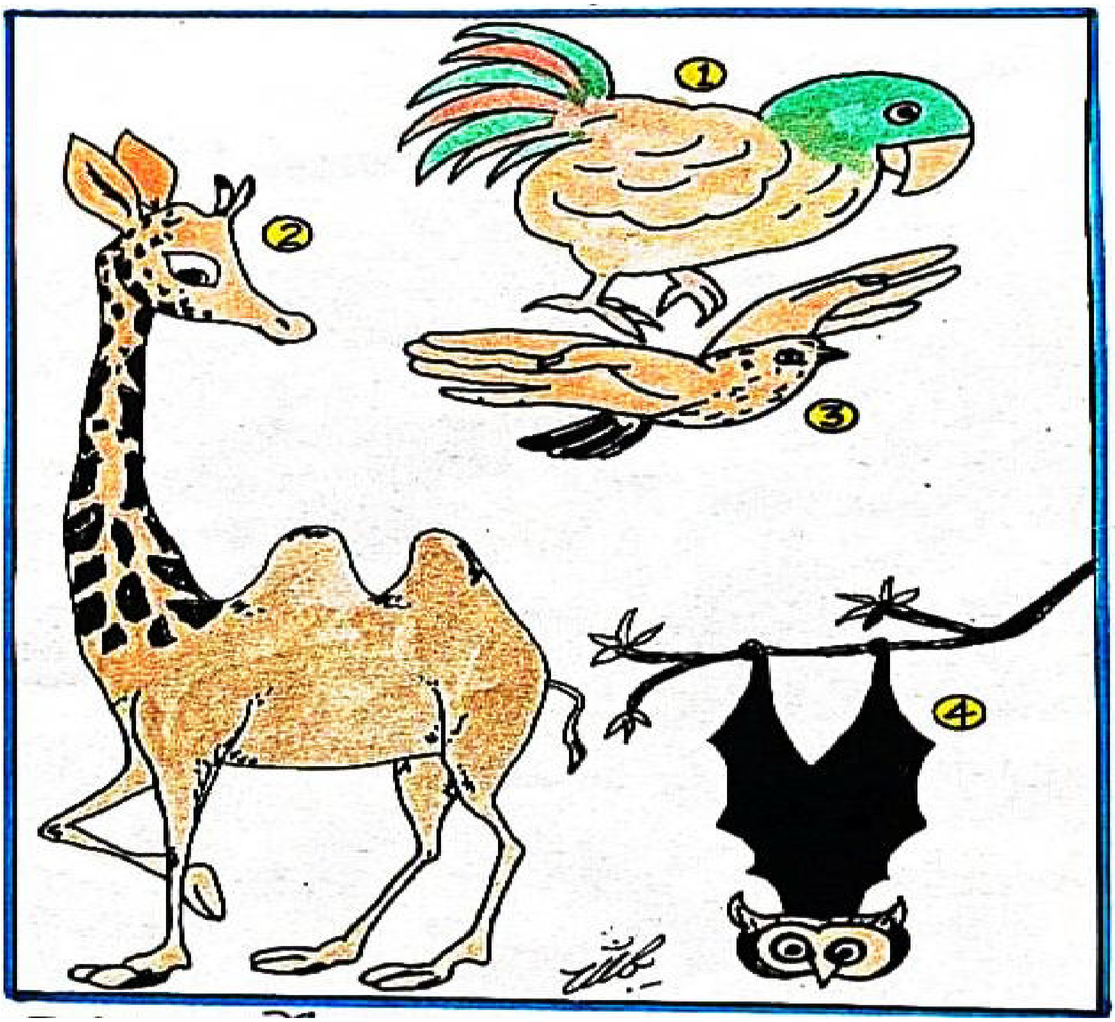

1. मुरगे के धड़ पर तोते का सिर। 2. ऊंट के धड़ पर जिराफ का सिर
3. चिड़िया के पंखों की जगह मानव की हथेलियां।
4. चमगादड़ के धड़ के नीचे उल्लू का सिर है।

पता - नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी

दुनिया के देश

संजय पुरोहित

लातविया

हेलो माई डियर फ्रेण्ड्स। उम्मीद करते हैं कि आप सब फिट एण्ड फाईन होंगे। दुनिया के देशों की सैर करने के इस अनोखे कॉलम में आज हम आपको लिये चलते हैं लातविया। इस देश का नाम आपने सुना तो होगा लेकिन बहुत अधिक नहीं सुना होगा। इसे एक अन्तर्मुखी देश समझा जाता है। यह नॉर्थ ईस्ट यूरोप मे स्थित है। लातविया उन तीन बाल्टिक देशों में से है जिनका दूसरे विश्वयुद्ध के बाद सोवियत संघ मे विलय कर दिया गया था। लातविया के बॉडर्स लिथुआनिया, एस्टोनिया, बेलारूस और रूस से मिलती है। यह एक छोटा सा देश है जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग पैंसठ हजार वर्ग किलोमीटर है। इसकी जनसंख्या भी अधिक नहीं है। भारत के कई राज्यों से भी कम यानी केवल तीन लाख के लगभग है। लातविया की राजधानी रीगा है। यहां अधिकांश नागरिक लातवियाई ओरिजिन के हैं किंतु रूसी मूल के लोगों की भी अच्छी खासी तीस फीसदी आबादी है।

साभार – www.shutterstock.com

लातविया की भाषा लातवियाई है। यहां की करंसी का नाम है लात्स। यूरोपिय संघ का सदस्य बनने के बाद यहां भी यूरो मुद्रा प्रचलन में

आई। लातविया को 1991 मे सोवियत संघ से स्वतंत्रता मिली। 2004 में लातविया यूरोपिय संघ का सदस्य बना। 13वीं से 16वीं शताब्दी तक लातविया लिवोनिया और कौरलैंड तक फैला हआ था। यह उस अवधि में प्रूसियाई राजाओं के अधीन था। 17वीं शताब्दी में पोलैण्ड और स्वीडन ने लातविया पर अधिकार कर लिया था। 18वीं शताब्दी में न्येस्ताद की संधि के बाद लिवोनिया और

साभार – www.bordersofadventure.com

कौरलैंड रूसी साम्राज्य का भाग बन गये थे। लातविया पहली बार 1917 में एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया था।

लातविया में संसदीय गणतंत्र है। लातविया 26 प्रशासकीय जोन और 07 नगरीय जोन में विभाजित है जिन्हे अपरिन्कल्स और लियेपिलसेटास कहा जाता है। लातविया की संसद में सौ सीटें हैं। संसद का नाम है सैईमा। हर चार वर्ष में चुनाव होते हैं। लातविया का सबसे बड़ा धार्मिक समुदाय ईसाई है। एक मजेदार बात लातवियाई लोगों के बारे में यह है कि दुनिया की सबसे ऊंची महिलायें लातवाईयाई होती हैं। यहां औरतों की औसत ऊंचाई 170 सेमी होती है। लातविया के नाम सबसे लम्बे समय तक फोन वार्तालाप का विश्वरिकॉर्ड भी है। वर्ष 2012 में लगातार चौपन घंटे 04 मिनट तक यह वार्तालाप हुआ था। लातविया का राष्ट्रीय खेल आईस हॉकी है। लातविया के कुलदीगा में स्थित वेंटास रूबा यूरोप का सबसे बड़ा झरना है। इस छोटे से देश में दुनिया का चौथा सबसे तेज इंटरनेट कनेक्शन है। लातविया के लोग अत्यन्त प्रतिभाशाली माने जाते हैं। यहां के एक वैज्ञानिक फ्रेडरिक विल्हेम ओस्टवाल्ड को नोबल पुरस्कार भी मिला था। लातविया का ध्वज दुनिया के सबसे प्राचीन ध्वजों में से एक माना जाता है। यदि आपको संगीत की धुनों और डांस का शौक है तो लातविया आपके लिये सबसे अच्छी जगह हो सकता है। वो इसलिये क्योंकि हर पांच साल में यहां पर लातवियाई गीत और नृत्य का विशाल आयोजन किया जाता है। यह आयोजन दुनिया के सबसे बड़े शौकिया कोरल और नृत्य

महोत्सवों में से एक है। एक साथ लगभग चालीस हजार लोग शामिल होकर गाते और नाचते हैं। इस महोत्सव को यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक हैरिटेज सूची में शामिल किया गया है।

आपने पेरिस की खूबसूरती के बारे में तो सुना ही होगा लेकिन आपको यह भी बता दें कि लातविया की राजधानी रीगा अपनी आर्ट नोव्यू वास्तुकला के लिये प्रसिद्ध है। इसे क्लूसैस संेंटर्स कहते हैं। रीगा यूरोप का एक मात्र ऐसा शहर है जहां आज भी

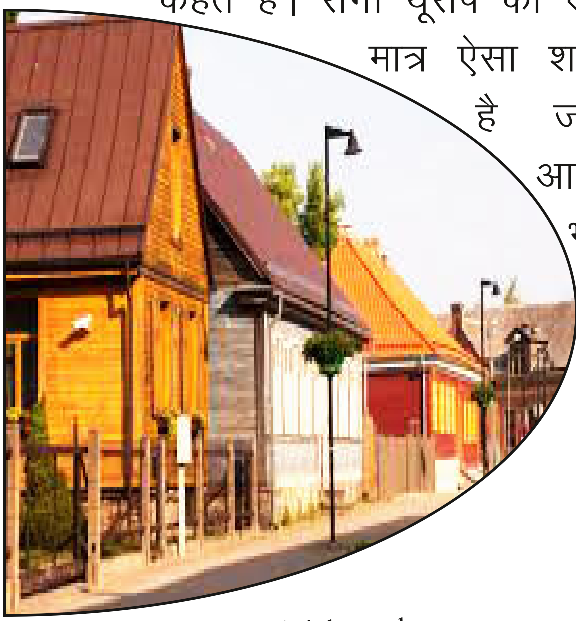

साभार – https://visit.jelgava.lv

सबसे बड़ी संख्या में लकड़ी की ईमारतें मौजूद हैं। इसे देखने के लिये दुनिया भर के पर्यटक लातविया आते हैं। लातविया में हर वर्ष की 23 जून को मिडसमर उत्सव मनाया जाता है। सबसे छोटी रात के दौरान सूर्योदय की प्रतीक्षा का यह अनोखा पर्व मनाया जाता है। यदि लातवियाई खान–पान की बात

साभार – www.istockphoto.com

करें तो लातविया की टेस्टी और ट्रेडिशनल डार्क राई ब्रेड का नाम आता है। इसे रूपजमेज के नाम से जाना जाता है। एक मिठाई भी है जो बहुत प्रसिद्ध है औरवो है रूपजमेज कार्टोजम्स। इसके अलावा ग्रे मटर भी लातविया के राष्ट्रीय व्यंजनों में से एक है। लातविया के लोग क्रिसमस के पर्व को दुनिया के किसी भी देश से ज्यादा भव्य रूप से मनाते हैं।

कहते हैं कि लातविया की राजधानी रीगा में 1510 में दुनिया का पहला क्रिसमस ट्री चमका था। इसके साथ ही क्रिसमस ट्री इस क्रिसमस के आयोजनों का मुख्य आकर्षण बना था। उम्मीद करते हैं कि लातविया की यात्रा आपको पसंद आई होगी। आपके जनरल नॉलेज में भी वृद्धि हुई होगी। अगले अंक में चलेंगे किसी और देश की सैर को। तब तक के लिये बॉय बॉय।

पता – समीप सूरसागर, बीकानेर

कुणाल के चूजे

टीकेश्वर सिन्हा

जैसे भी करके नन्हा कुणाल टेबल को सरकाते हुए दीवार तक ले गया। टेबल पर चढ़ा। गौरैये के घोंसले तक उसका हाथ भी चला गया। पता चला कि घोंसले में चार अण्डे हैं। बहुत खुशी हुई उसे। अंडों को पकड़—पकड़ कर देखा। फिर रख भी दिया। चूँकि घोंसला बैठक की दीवार पर दादाजी की तस्वीर के पीछे था। इसलिए उसे डर भी लगने लगा कि तस्वीर गिर न जाय। अपनी मम्मी को आवाज लगाई— मम्मी...! इस घोंसले में चार अण्डे हैं। आओ.. देखो न...। सफेद—मटमैले हैं। इन पर काले—भूरे रंग के छोटे—छोटे धब्बे बने हुए हैं। सच, बहुत सुंदर हैं मम्मी।

रहने दे बेटा... रहने दे. ..। कुछ मत करना। प्रिया कमरे में झट से आई— देख, वे दोनों चिड़िया बैठे हैं। देख रहे हैं बेचारे। ये उनके ही अण्डे हैं। प्रिया ने दरवाजे पर बैठे दो गौरैये की ओर इशारा किया। टेबल से उतरते हुए कुणाल बोला— चिड़िये के बच्चे अण्डे से बाहर आएँगे, तो फिर हम लोग इन्हें पालेंगे न मम्मी ?

चित्र साभार - www.finfact.co.in

हाँ, ठीक है बेटा। पर रोज—रोज टेबल पर चढ़ कर मत देखना अण्डों को। टेबल को खिसकाते हुए प्रिया ने कहा— इन चिड़ियों को अच्छा नहीं लगेगा। इन्हें अण्डे असुरक्षित लगेंगे। हाँ, मम्मी। मैं अब कुछ नहीं करूँगा अण्डों को; और इन चिड़ियों को भी। कहते हुए कुणाल बैठक से बाहर निकला।

एक हफ्ते बाद अण्डों से

चूजे निकले। सबसे पहले प्रिया ने चूजों की चींची–चींची सुनी। उसके बुलाने पर कुणाल दौड़ कर आया। फिर कुणाल का मन चूजों को देखने को हुआ। प्रिया ने कुणाल को अपने दोनों हाथों से पकड़ कर ऊपर उठाया। बोली– उन्हें दूर से देखो। छूना मत। प्रिया के मना करने पर कुणाल को दूर से ही देख कर ही संतुष्ट होना पड़ा।

अब तो रोज कुणाल घोंसले पर नजर रखने लगा था। नन्हे चूजों की आवाज सुन कर उसे बहुत अच्छा लगता था। साथ ही, यह भी देखता कि चूजों के मम्मी–पापा अपनी चोंच में दबाकर उनके खाने के लिए कुछ न कुछ लाते थे। फिर अपनी मम्मी से पूछ कर कुणाल घोंसले के नीचे एक कटोरी में पानी रखने लगा था। चूँकि खेतों में धान की फसल थी उस समय, सो उसने धान की कुछ पकी बालियाँ रस्सी से बाँधकर घोंसले के पास टाँग देता था। दोनों गौरैये बालियों में झूल–झूल कर पके दानों का खूब मजा उड़ाते थे।

देखते ही देखते पंद्रह दिन बीत गये। चूजे बड़े हो गये। अब उड़ने की उनकी इच्छा होती थी। घोंसले से वे झाँक–झाँक कर देखते थे। अपने मम्मी–पापा के अलावा कुणाल को भी पहचानने लगे थे। अब तो ऐसा भी होता था कि जैसे ही कुणाल कमरे में आता, या फिर बाहर से ही उसकी आवाज सुनाई देती, इनकी चींची–चींची शुरू हो जाती। कुणाल को भी इन नन्हे चूजों से बड़ा लगाव हो गया था; तभी तो वह घोंसले में कभी चने के दाल, कभी पॉपकॉर्न के दाने, तो कभी बिस्किट के कुछ टुकड़े डाल देता था। कुणाल को बड़ा आनंद आता था। बड़ा सुकून मिलता था।

कभी–कभी चूजों की चींची–चींची सुन कर प्रिया कहा करती थी– अरे..चुप रहो न रे... कुणाल के चूजे ! हद हो गयी तुम लोगों की चींचीं... चींचीं..। मम्मी...! आप भी न...! मेरा मजाक उड़ा रही हो। मुस्कुराते हुए कुणाल प्रिया से लिपट जाता था।

पता – घोटिया–बालोद (छत्तीसगढ़)

चंदा मामा

डॉ. अरविन्द दुबे

चित्र – कुणाल शर्मा

चंदा मामा, चंदा मामा,
हमको एक बात समझाना।
मामा तो तुम हो पर बोलो,
कहां मिले मेरे नाना ?

तुम तो सिर्फ रात को दिखते,
दिन भर क्या करते रहते हो ?
क्यों दिन में जाकर छिप जाते,
सूरज से इतना डरते हो ?

रात को जो जल्दी सोते हैं,
और सुबह को जल्दी उठते।
दादी कहतीं वह होते हैं,
अच्छे बच्चे, प्यारें बच्चे।

फिर क्यों रात–रात भर चलते,
क्यों दिन में हो सोते रहते ?
बोलो क्या तुम नहीं चाहते,
बनना सबके प्यारे बच्चे।

सूरज से क्या डरना, चंदा बोला
अपने दोनो पांव पसार।
वह दिन के महाराजा हैं और,
मैं रातों का राजकुमार।

पता – 546/1284, आकर्ष हॉस्पिटल, लखनऊ

डर ही डर

डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी

चित्र – नारायण सेवग

दो हाथों से खाती गिलहरी
कौए को वह देख कैसे डरी!
बूंद वर्षा की जो सहसा गिरी
तो पत्ते पर बैठी चींटी डरी।
सिर पर जब मुसीबत आ पड़ी
तो नन्हीं चिड़िया खूब डरी।
पोंकी डॉगी मारती थी तड़ी
कड़की बिजली तो बहुत डरी।
नन्हीं बिल्ली बालकोनी में खड़ी
बजा पटाखा तो खूब डरी।

पता – 43, देश बंधु सोसाइटी, दिल्ली

रात का समय

अर्पित पुष्करणा

सुबह से शाम हो गई। शाम को 5:00 बजे बिजली की लाइन कट चुकी थी। मैंने सोचा कि मौसम खराब है इसलिए बिजली की लाइन कट चुकी है। लेकिन मौसम सही होने पर भी बिजली नहीं आई। लाईट न होने के कारण हमें छत पर सोना होता है जहां मच्छर बहुत काटते है। इसलिए मैं चिन्तित हो गया।

मैं रात के समय की कल्पना में खो गया। रात को नींद नही आएगी। गर्मी के मारे तड़पेंगे। छत पर हवा हुई ही नहीं तो क्या होगा। फिर मैंने सोचा कि हवा के बिना तो रह लेंगे लेकिन मच्छर नही सोने देंगे।

रात हो गई मैं मोबाइल देखने लगा। मोबाइल में मेरा पसंदीदा एपिसोड को मैंने देखा। भोजन किया और अपने चारपाई पर सो गया। मेरे दिल को शांति मिली। मैंने कल्पना की थी वैसा हुआ नहीं हुआ। मैं सो गया इतने में ही मेरी दादी ने कहा जाग बेटा। मैंने कहा क्या हुआ दादी इतनी रात को क्यो उठाया। दादी ने कहा चल छत पर सोते है। मैंने कहा, आखिर क्यों ? दादी ने कहा लाइट नही है। इतने में आवाज आई। मैंने सोचा क्या हुआ ? शायद मैं नीचे पंखा चालू छोड़ कर आया था लेकिन लाइट तो है ही नही। फिर पंखा चालू कैसे हो गया। मुझे पता चला लाइट आ चुकी है। मैंने मेरी चारपाई पर बिस्तर डाला और सो गया। थोड़ी देर में दादी ने उठाया। दादी ने कहा बेटा उठ जा। मैं चिलाया नही..नही.. नही... मुझे छत पर नही जाना। दादी ने कहा बेटा उठ, दिन हो गया। और तू रात से लाइट के बारे में चिल्ला रहा है। क्या हुआ लाइट तो रात से है। फिर मैं उठा और पता चला यह सब सपना था। और मुझे इस सपने से बहुत मजा आया।

कक्षा 6 विद्यार्थी, महाजन

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

प्यारे बच्चों प्रति माह हम आकाश में अलग–अलग खगोल घटनाओं को देखते है। इसके बारे में जानकारी प्राप्त करते है। इसलिए मैं आपको हमेशा कहता हूं कि यह आसमान विचित्रताओं से भरा हैं, आइए जानते है इस माह की खगोलिय घटनाओं के बारे में।

दिनांक 12 फरवरी 2025 को पूर्णिमा है। बच्चों क्या आप जानते है कि पूर्णिमा क्या होती है। जानते हैं, तो अच्छी बात है। लेकिन नहीं जानते है तो, मैं आपको बताता हूं कि पूर्णिमा प्रतिमाह में एक बार आती है। इस दिन हम आकाश में चन्द्रमा को पूरा गोल आकृति में देख सकते है तथा चन्द्रमा हमेशा की बजाय पूर्णिमा को ज्यादा चमकृत दिखाई देगा।

चित्र साभार www. in.pinterest.com

अब जानते है इसके पीछे क्या खगोलीय कारण है। हमारी पृथ्वी सूर्य के चारों ओर लगातार परिक्रमा लगाती है और उसे ऐसा करने में 365 दिन का समय लगता है, इसके साथ ही पृथ्वी का उपग्रह चंद्रमा भी पृथ्वी के लगातार चक्कर लगाता है इसमें उसे 27 दिन 7 घंटे का समय लगता है ।

इस परिक्रमा के दौरान ऐसी स्थितियां बनती है जब यह तीनों पिंड चंद्रमा, सूर्य एवं पृथ्वी एक सीध में हो जाते हैं इसमें एक स्थिति यह है जब पृथ्वी सूर्य और चंद्रमा के बीच में आ जाती है किंतु यह ठीक एक सीधी रेखा पर नहीं होते हैं बल्कि सीधी रेखा से थोड़ा हटकर होते हैं इस स्थिति में सूर्य का प्रकाश चंद्रमा पर पड़ता है और सीधी रेखा में ना होने के कारण हमें पृथ्वी से यह चंद्रमा का पूरा प्रकाशित सतह दिखाई देती है तब चांद हमें पूरा दिखाई देता है इसे हम पूर्णिमा कहते हैं ।

पूर्णिमा को टेलिस्कोप से जब आप चन्द्रमा को देखते है तो आपको चन्द्रमा पर बने धब्बे बहुत ही साफ दिखाई देगे तथा चन्द्रमा भी बहुत साफ नजर आएगा। पूर्णिमा के बाद प्रतिदिन चन्द्रमा की आकृति हमें घटती हुई नजर आती है। इसी प्रकार माह में एक दिन अमावस्या होती है। इस माह 28 फरवरी को अमावस्या है। अमावस्या के दिन आकाश में चन्द्रमा हमें दिखाई नहीं देता है। ऐसा क्यों होता है ? इसके बारे में जानते है।

जब चंद्रमा सूर्य और पृथ्वी के बीच में होता है लेकिन ठीक सीधी रेखा पर नहीं, इस स्थिति में सूर्य से चंद्रमा पर जो प्रकाश पड़ता है वह हमें दिखाई नहीं देता क्योंकि हम पृथ्वी पर चंद्रमा के दूसरी तरफ है इस कारण चंद्रमा

चित्र साभार www.mypandit.com

हमें काला दिखाई देता है इस स्थिति को अमावस्या कहते हैं यह अमावस्या काली रात होती है।

इस दिन हम आकाश में अन्य उदय ग्रहों एवं आकाशगंगाओं को साफ देख सकते है।

पूर्णिमा और अमावस्या के बीच में 15 दिन का अंतर होता है महीने में 30 दिन होते हैं 15 दिन बाद अमावस्या और फिर 15 दिन बाद पूर्णिमा यह क्रम चलता रहता है पूर्णिमा को चांद पूरा दिखाई देता है और अमावस्या को चांद रोशनी ना होने के कारण वह हमें काला दिखाई देता है।

जब यह पिंड ठीक एक सीधी रेखा पर हो जाते हैं तब पूर्णिमा के दिन चंद्र ग्रहण हो जाता है और अमावस्या के दिन सूर्य ग्रहण हो जाता है।

आकाश में ग्रहों की स्थिति
(09 फरवरी 2025)

ग्रह	उदय	अस्त	मध्याहन	स्थिति
बुध	7:28	18:24	12:56	दुर्बल
शुक्र	09:14	21:37	15:25	अच्छा
मंगल	15:36	5:40	22:38	अच्छा
गुरू	13:05	02:47	19:56	अच्छा
शनि	08:49	20:26	14:38	दुर्बल
यूरेनस	11:58	01:23	18:41	दुर्बल
नेपच्यून	09:15	21:10	15:13	दुर्बल

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों आप अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय आकर नई-नई पुस्तके पढ़ सकते हो।

यहां के सामुदायिक पुस्तकालय में खिलौने, पेन्टिग आदि का प्रत्येक शनिवार एवं रविवार को आयोजन होता है। इसमें आप आकर अपनी पसन्द की पेन्टिग बना सकते है। इस पेन्टिग को संस्था द्वारा ऑन लाईन प्रकाशित बाल पत्रिका 'चहल-पहल' में प्रकाशन हेतु दे सकते हो। संस्था द्वारा समय समय विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित की जाती है, इसमें भी आप भाग लेकर बहुत कुछ नया सीख सकते हो।

पुस्तकालय का समय - प्रात: 11:00 से सायं 6:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन
आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486
अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com